फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 73 संख्याः 281 प्रभात जयपुर, रविवार 14 मई , 2023 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 3.50 रु.

ARBiT

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

epaper.rashtradoot.com

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

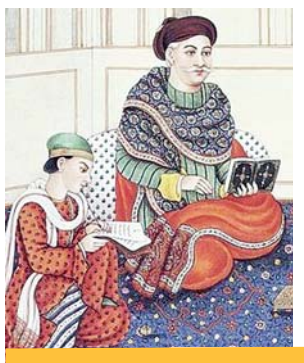

WHAT'S IN A SURNAME!! Singh is Missing, Though

SHARMA JI- I did a lot of research for the origin of Sharma surname but got ambiguous answers.

Vast Array of Star Nurseries

MOTHERS DAY : Defying the Odds | Remarkable stories of three single mothers from Jaipur

कर्नाटक ने राहुल का हौसला बढ़ाया, और कड़े निर्णय लेने के बारे में

अब राजस्थान में स्थिति को अनिर्णय के कारण लटकने नहीं दिया जायेगा

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 13 मई। कर्नाटक में एक बड़ी जीत का स्वाद लेने के बाद, कांग्रेस अब अपने अन्य राज्यों को व्यवस्थित करने की दिशा में काम करेगी।

अब सबकी नजरें राजस्थान पर टिकी हैं, जहां पार्टी की अंदरूनी लड़ाई अपने चरम पर है तथा विधानसभा चुनाव इस वर्ष के अंत में ही होने हैं।

कांग्रेस के निर्णय लेने वाले नेताओं के नजदीकी सूत्रों ने प्रामाणिक रूप से कहा है कि, पार्टी निष्क्रियता की स्थिति को जारी नहीं रहने देगी।

कांग्रेस को मिले इस भारी जनादेश से अशोक गहलोत कमजोर हुए हैं क्योंकि अब वे सचिन पायलट के खिलाफ एक तरफा कार्यवाही के लिये दबाव नहीं बना सकते, जैसा करने की कोशिश वे करते रहे हैं। कर्नाटक के जनादेश से सचिन पायलट मजबूत हुये हैं क्योंकि अब ऐसी अपेक्षा बनी है कि पार्टी नेतृत्व अब उनसे बातचीत करेगा और उनसे पूछेगा कि पार्टी में संतुलन की स्थिति लाने के लिये वे क्या चाहते हैं।

- **कर्नाटक की जीत ने गहलोत को कमजोर किया और अब वे सचिन पायलट के खिलाफ एकतरफा कार्यवाही के लिये दबाव नहीं बना पायेंगे, जैसा कि, वे अब तक करते आये थे।**
- **कर्नाटक के निर्णय ने पायलट को मजबूत किया और अब हाई कमान पायलट से सकारात्मक बातचीत करना चाहेगा, यह जानने के लिये कि, वो क्या चाहते हैं, पार्टी में संतुलन स्थापित करने के लिये।**
- **कर्नाटक के बाद पार्टी अब राजस्थान खोना नहीं चाहेगी, अतः गहलोत की एकतरफा मनमानी करने की प्रवृत्ति पर अंकुश लगेगा।**
- **यह भी माना जा रहा है कि, कर्नाटक में सरकार स्थापित करने के बाद, हाई कमान केन्द्रीय संगठन में परिवर्तन व फेरबदल भी करेगा तथा कांग्रेस वर्किंग कमेटी, संसदीय बोर्ड आदि, का भी पुनर्गठन होगा।**

चूंकि नेतृत्व की अब इस बात में पहले से कहीं ज्यादा दिलचस्पी है कि राजस्थान पार्टी के हाथ से न निकले, इसलिए अब अशोक गहलोत को एक पक्षीय खुला खेल खेलने की अनुमति नहीं दी जा सकती।

सूत्रों का कहना है कि सचिन पायलट को पार्टी की व्यवस्था में उनका वाजिब हिस्सा मिलेगा क्योंकि उन्होंने अपनी मांगों की सूची बना ली है तथा वे टिकट वितरण के लिये अपनी दावेदारी प्रस्तुत करना चाहते हैं।

कांग्रेस इस बात को जानती है कि नरेन्द्र मोदी पर प्रहार करने तथा उन्हें और भाजपा को कमजोर करने का सर्वोत्तम तरीका विजय प्राप्त करते रहना है। लेकिन विजय तब तक प्राप्त नहीं की जा सकती, जब तक पार्टी अपने घर को व्यवस्थित न कर लिया जाए तथा आपस में लड़ रहे नेताओं को साथ-साथ न कर लिया जाए, जैसा कि कर्नाटक के मामले में हुआ था।

कर्नाटक में सरकार बन जाने के बाद, ऐसी अपेक्षा है कि नेतृत्व केन्द्र तथा

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

नाबालिग से सामूहिक दुष्कर्म का मामला दर्ज

नारायणपुर, 13 मई (निसं)। नारायणपुर थाना इलाके में नाबालिग के साथ गैंगरेप की घटना सामने आई है। घटना शुक्रवार दोपहर की है। परिजनों की रिपोर्ट के आधार पर पुलिस ने जांच शुरू कर दी है।

पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार, 15 वर्षीय बालिका तबीयत ख़राब होने के कारण दवा लेने के लिए हॉस्पिटल जा रही थी। अचानक दो लड़के आये और बालिका को पास में निर्माणाधीन मकान में ले गए और उसके साथ दुष्कर्म किया। वहीं, नाबालिग के परिजन भी दवाई लेने बाहर गए हुए थे। देर शाम माता-पिता के घर आने पर लड़की ने परिजनों को पूरी घटना की

- **मामला नारायणपुर थाना इलाके का है, 15 वर्षीय बालिका दवा लेने हॉस्पिटल जा रही थी, तब दो युवक उसे जबर्दस्ती निर्माणाधीन मकान में ले गए और दुष्कर्म किया, पुलिस ने पोक्सो एक्ट के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।**

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सिद्धारमैया सबसे आगे हैं, मु.मंत्री की दौड़ में?

खड़गे, जो कि बैंगलोर में डेरा डाले हुए हैं, मंत्रिमण्डल के गठन में व विभागों के वितरण में भारी भूमिका निभायेंगे

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 13 मई। दक्षिण भारत में पहुँचने के लिये भाजपा के पास उपलब्ध एकमात्र प्रवेश-द्वार बंद कर देने तथा कर्नाटक में भाजपा पर निर्णायक जीत दर्ज कर लेने के बाद, कांग्रेस अब कर्नाटक में नेतृत्व के मुद्दे के समाधान पर ध्यान केन्द्रित कर रही है।

कर्नाटक का अगला मुख्यमंत्री कौन होगा?

सिद्धारमैया इस दौड़ में सबसे आगे तथा कर्नाटक में मुख्यमंत्री की कुर्सी पर कब्जा करने वाले अपेक्षित नेता हैं। वे राज्य के सबसे बड़े जन-नेताओं में से एक होने के साथ ही पिछड़े "कोरबा" समुदाय से आने वाले अपनी जाति के एक बड़े नेता हैं।

सूत्रों का कहना है कि कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे इस समय बेंगलुरु में रुके हुये हैं तथा ऐसी आशा की जा रही है कि

- **डी.के. शिव कुमार के बारे में पार्टी को बड़ा निर्णय लेना है। उन्हें मनपसंद विभाग देकर मंत्री तो बनाया ही जायेगा, पर, क्या उन्हें उपमुख्यमंत्री का पद दिया जायेगा अथवा मंत्री पद के साथ प्रदेशाध्यक्ष की जिम्मेवारी दी जायेगी।**
- **अगर शिव कुमार के लिये उप मु.मंत्री का पद सृजित हुआ तो दो-तीन और उप मु.मंत्री बनाये जा सकते हैं, अन्य जात/जातियों की महत्वकांक्षा की पूर्ती के लिये।**
- **मल्लिकार्जुन खड़गे के पुत्र प्रियांक का नाम भी इसी संदर्भ में लिया जा रहा है। पर खड़गे शायद परिवारवाद के लांछन से बचने के लिये यह नहीं होने देंगे।**
- **सभी निर्णय साल भर बाद होने वाले लोकसभा चुनाव को मद्देनज़र रखते हुए लिये जायेंगे तथा मल्लिकार्जुन खड़गे भी लोकसभा चुनाव के बाद, अतिमहत्वपूर्ण भूमिका निभाने के इच्छुक तो हैं ही।**

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'घृणा व साम्प्रदायिकता से ऊपर उठ कर सबके लिये शांति व मोहब्बत को चुना'

राहुल गांधी ने कर्नाटक की जीत की विवेचना करते हुए कहा

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 13 मई। दिल्ली में कांग्रेस पार्टी के मुख्यालय पर एक कांग्रेस कार्यकर्ता भगवान हनुमान जी जैसी पोशाक पहन कर ढोल-नगाड़ों की थाल पर नाचते हुए देखा गया। पार्टी मुख्यालय पर सुबह से ही जश्न का माहौल था क्योंकि कांग्रेस की विजय पर सभी को यकीन था। कर्नाटक की जनता ने भाजपा और उसकी साम्प्रदायिक नीतियों को नकार दिया और शांति प्रेमी कन्नड़ लोगों ने कांग्रेस की लोक कल्याणकारी आर्थिक व्यवस्था और सुशासन के लिये वोट किया।

कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने कहा कि कर्नाटक ने नफरत की राजनीति को नकार दिया और सभी के लिए प्रेम और शांति के मार्ग को चुना है।

कांग्रेस की सफलता किसी हद तक उसके सकारात्मक चुनाव अभियान और अलोकप्रिय बोम्मई सरकार के खिलाफ चल रही सरकार विरोधी लहर की देन हैं। कांग्रेस ने सरकार विरोधी लहर को सफलता से भुनाया। कांग्रेस अपने रचनात्मक अभियान "40 प्रतिशत सरकार और पेसी.एम." के जरिए भ्रष्टाचार के मुद्दे को जन-जन तक ले गई। भाजपा पूरी तरह से अपने स्टार प्रचारक प्र.मंत्री मोदी पर निर्भर थी पर वे भी पार्टी को इस जबर्दस्त हार से बचा नहीं पाए।

उनके इस जबर्दस्त प्रचार से सिर्फ यही फायदा हुआ कि भाजपा और ज्यादा अपमानजनक हार का सामना करने से बच गई।

जब शुरुआती रुझान बराबर की टक्कर का संकेत दे रहे थे तो ऑपरेशन लोट्स से भयभीत कांग्रेस ने सभी निर्वाचित विधायकों को बैंगलोर आने का आदेश दिया था। पार्टी उन्हें समीपवर्ती राज्य तेलंगाना के एक रिसॉर्ट में भेजने वाली थी। हालांकि हैदराबाद में रिसॉर्ट बुक करा लिया गया है। जहां पार्टी नेता अगले मुख्यमंत्री के बारे में विचार करेंगे। संभावना है कि पूर्व मुख्यमंत्री सिद्धारमैया को पार्टी की तरफ से हरी झंडी मिलेगी। वे राज्य के उन चंद मुख्यमंत्रियों में से एक हैं जिन्होंने 5 साल का कार्यकाल पूरा किया है। कांग्रेसी सूत्रों ने कहा कि, शिवकुमार जो खुद भी मुख्यमंत्री बनने

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- **मतगणना के प्रारंभिक दौर में जब लग रहा था कि, चुनाव परिणाम बहुत "टाइट" होंगे, तब कांग्रेस ने सभी विधायकों को बैंगलोर बुलाकर तेलंगाना शिफ्ट करने की सोची थी तथा इसके लिये पड़ोसी राज्य तेलंगाना में एक रिसॉर्ट "बुक" भी कर लिया गया था।**

मैट्रो कार डिपो के लिए भूमि अवाप्ति की कार्यवाही निरस्त

जयपुर, 13 मई (का.सं.)। राजस्थान हाईकोर्ट ने जयपुर मैट्रो के लिए मैट्रो कार डिपो बनाने के लिए सीतापुरा में 27 हेक्टेयर भूमि की अवाप्ति की संपूर्ण कार्रवाई को निरस्त कर दिया है। अदालत ने धारा 4 के तहत 26 मई, 2011 को जारी अधिसूचना, 5 जुलाई, 2012 की अधिसूचना और 11 जुलाई को जारी नोटिस को नियमों के विरुद्ध मानते हुए निरस्त कर दिया है। अदालत ने अपने आदेश में कहा कि अवाप्ति प्रक्रिया के दौरान धारा 5ए के जरूरी प्रावधानों की पालना नहीं की गई है। ऐसे में राज्य सरकार और मैट्रो प्रशासन संबंधित भूमि को लेकर हस्तक्षेप ना करें। जस्टिस उमाशंकर व्यास ने यह आदेश आलोक कोटावाला व अन्य की याचिका पर दिए। अदालत ने कहा कि भूमि अवाप्ति अधिकारी के समक्ष भूमि पर विशाल वृक्षारोपण, डीपीआर तैयार नहीं होने, भूमि पर मोटल निर्मित होने और कुछ भूमि की

- **राजस्थान हाई कोर्ट ने कहा कि, सीतापुरा के मैट्रो कार डिपो के लिए 27 हैक्टेयर भूमि की अवाप्ति प्रक्रिया में नियमों की पालना नहीं की गई है।**

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

दक्षिण भारत अब भाजपा मुक्त हुआ, कर्नाटक की हार के बाद

पर, भाजपा को इस बात का दुःख ज्यादा है कि, प्र.मंत्री मोदी का करिश्मा कमजोर पड़ रहा है

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 13 मई। कर्नाटक के चुनाव परिणाम से 2024 के लोकसभा चुनावों से पहले, विपक्षी एकता की संभावनाएं ऊर्जा से भर गई हैं। विपक्ष शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों, जिनमें एम.के. स्टालिन, ममता बनर्जी तथा नीतीश कुमार शामिल हैं, के इकट्ठे होने की संभावना है। सूत्रों ने कहा कि मुख्यमंत्रीगण उस दिन नीति आयोग में एक महत्वपूर्ण मीटिंग के सिलसिले में दिल्ली का रूख करेंगे, किन्तु वस्तुतः वे इस अवसर का उपयोग एकता वार्ता के लिये करेंगे।

कर्नाटक में कांग्रेस की निर्णायक जीत के साथ ही, दक्षिण भारत के 6 राज्य "भाजपा मुक्त" हो गये हैं। माना जा रहा है कि समुद्रतटीय राज्यों की 270 लोकसभा सीटों पर भगवा पार्टी की संभावनाएं बहुत क्षीण हो गई हैं। केवल गुजरात ही इसका अपवाद है। उत्तर प्रदेश तथा गुजरात के अलावा कुछ छोटे राज्यों, जैसे हरियाणा, उत्तराखण्ड तथा असम को छोड़कर, शेष भारत में कहीं भी भाजपा का वर्चस्व नजर नहीं आ रहा है।

इस प्रकार कर्नाटक का जनादेश विपक्षी खेमे में उम्मीद की एक नई किरण लेकर आया है।

बिहार के मुख्यमंत्री ने इस विचार को प्राथमिकता दी है कि प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार के नाम की घोषणा के साथ, चुनाव पूर्व कोई औपचारिक गठबंधन करने के बजाय, गैर भाजपा पार्टियों को एक फैडरेशन के रूप में एकजुट किया जाये तथा 2024 के आम चुनावों में सभी या अधिकांश लोकसभा सीटों पर भाजपा के खिलाफ विपक्ष के केवल एक ही उम्मीदवार को खड़ा करने की व्यवस्था की जाये। कुमार ने यह भी प्रस्तावित किया है कि एन.सी.पी. प्रमुख शरद पवार विपक्ष का

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- **इस घटनाक्रम से विपक्ष में भी जोश भरा तथा नीतीश फॉर्मूला अब अधिकतर स्वीकार्य सा है, पूर्ण विपक्ष को।**
- **नीतीश फॉर्मूले के अनुसार हर सीट पर विपक्ष एक ही उम्मीदवार खड़ा करेगा तथा विपक्ष की ओर से शरद पवार को विपक्ष के चेहरे के रूप में प्रोजैक्ट किया जायेगा।**
- **यह बात जरूर है कि, कर्नाटक के चुनाव अभियान में मोदी ही मुख्य प्रचारक व भाजपा के एंकर की भूमिका निभा रहे थे तथा स्थानीय नेता येदियुरप्पा, बोम्मई या नलिन कुमार कतील सहायक भूमिका में ही थे।**

भाजपा का मु.मंत्री के राहत शिविरों पर कटाक्ष

जयपुर, 13 मई (का.सं)। भाजपा की प्रदेश इकाई के मुख्य प्रवक्ता एवं विधायक रामलाल शर्मा ने कहा कि राजस्थान प्रदेश की जनता की ओर से मैं कांग्रेस सरकार और कांग्रेस के नेता अशोक गहलोत जी को इस बात की ढेर सारी शुभकामनाएँ और बधाई दूँगा कि आखिरकार प्रदेश में चल रहे राहत कैंपों के अंदर राजस्थान की जनता को एक और राहत प्रदान करने का काम आपने किया है और वो राहत इस बात की है कि पिछले महीने 45 पैसे प्रति यूनिट आपने फ्यूल चार्ज लगाकर राहत प्रदान करने का काम किया और अब प्रदेश की जनता के ऊपर बिजली बिल में 52 पैसे प्रति यूनिट सरचार्ज लगाकर अगले महीने से आप राहत प्रदान कर रहे है, इससे ज़्यादा राहत आप आमजन को दे

- **भाजपा की प्रदेश इकाई के मुख्य प्रवक्ता रामलाल शर्मा ने कहा, बिजली बिलों में बार-बार सरचार्ज के नाम पर पैसे बढ़ाकर प्रदेश की जनता को राहत प्रदान करने का काम कर रहे हैं।**

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'राजस्थान पर आलाकमान लेगा फैसला या पायलट चुनेंगे अपनी राह'

कर्नाटक में कांग्रेस की जीत के बाद सचिन पायलट की जनसंघर्ष यात्रा में समर्थकों के बीच यही चर्चा प्रमुख है

जयपुर, 13 मई (का.प्र.)। कर्नाटक विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की जीत के बाद अब राजस्थान को लेकर जल्द फैसला होने की संभावना है। ऐसा इसलिए कहा जा रहा है क्योंकि, सचिन पायलट ने जिस तरह के तेवर अपना रखे हैं और दूसरी ओर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत सहित उनका खेमा बयानबाजी कर रहा है, उसके बाद कांग्रेस आलाकमान के लिए राजस्थान को लेकर जल्दी फैसला करना जरूरी बताया जा रहा है। कारण स्पष्ट है कि, राजस्थान में 6 महीने बाद विधानसभा चुनाव होने हैं।

इधर जिस तरह से भ्रष्टाचार के मुद्दे को लेकर सचिन पायलट ने पहले अनशन किया और अब 5 दिन की जन संघर्ष यात्रा निकाल रहे हैं, उसको लेकर तो यह भी कहा जा रहा है कि, यदि जल्द ही कांग्रेस आलाकमान ने सचिन पायलट की ओर से उठाए गए मुद्दों को लेकर कोई फैसला नहीं लिया, तो सचिन पायलट भी कोई बड़ा फैसला ले सकते हैं। हालांकि पार्टी छोड़ने की बात पर उन्होंने पहले ही कह दिया है कि, किसी तरह की अटकलें नहीं लगाई जानी चाहिए। क्योंकि, वो जो भी करते हैं, कहते हैं, सामने करते हैं। इसलिए माना जा रहा है कि, आने वाले तीन-चार दिन काफी महत्वपूर्ण होंगे। क्योंकि, पिछले 3 दिन से चल रही सचिन पायलट की

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- **जयपुर जिले में पहुंचने के बाद तीसरे दिन यात्रा में पहले 2 दिन के मुकाबले भीड़ और बढ़ने लगी है।**
- **मना करने के बावजूद विधायकों का पहुंचना जारी है, कई बोर्ड निगमों के चेयरमैन और पूर्व विधायक भी चल रहे हैं यात्रा में।**

सचिन पायलट की प्रदेश में पिछले तीन दिन से चल रही जनसंघर्ष यात्रा में अब पहले से भी कहीं ज्यादा भीड़ जुटने लगी है। पायलट की जन संघर्ष यात्रा ने शनिवार को जयपुर जिले में प्रवेश किया। शनिवार को पायलट के साथ चल रहे कार्यकर्ताओं में जबरदस्त जोश नज़र आया।